Thematic Apperception Test
(विषय–आत्मबोधन परीक्षण)

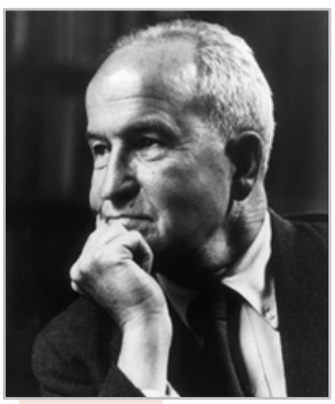

T.A.T. एक प्रकार का प्रक्षेपी मनोवैज्ञानिक परीक्षण है जिसका निर्माण **Murray** ने 1935 में हारवार्ड विश्वविद्यालय, अमेरिका में किया। 1938 में **Morgan** के साथ मिलकर इस परीक्षण का संशोधित रूप प्रस्तुत किया। इस परीक्षण को अर्न्तबोध परीक्षण तथा कथा प्रसंग परीक्षण भी कहा जाता है। इस परीक्षण का प्रयोग व्यक्तिगत व सामूहिक दोनों रूपों में किया जा सकता है। इस परीक्षण में कुल 31 कार्ड है जिसमें 30 कार्ड पर अस्पष्ट चित्र बने हुए हैं और 1 कार्ड पर बिल्कुल खाली है। 30 कार्ड में से 10 कार्ड पर पुरूषों से संबंधित चित्र, 10 कार्डों पर स्त्रियों से संबंधित चित्र तथा अन्य 10 कार्डों पर दोनों से संबंधित चित्र बने होते हैं। प्रत्येक कार्ड पर नम्बर अंकित है। किसी एक **Subject** पर 20 कार्ड का उपयोग किया जाता है। कार्ड की बढ़ती हुई संख्या के साथ उसकी अस्पष्टता बढ़ती गई है। **Subject** को पहले एक नम्बर का कार्ड दिया जाता है और उस पर रेखांकित चित्र को देखकर अपनी कल्पना के आधार पर एक कहानी लिखने को कहा जाता है। कहानी लेखन में **Subject** को तीनों बात लिखनी पड़ती है :- (1) कार्ड पर प्रतीत होने वाली घटना से पूर्व कौन सी घटना घटी होगी। (2) वर्त्तमान घटना से किन-किन बातों का संकेत मिलता है। (3) भविष्य में किन बातों की घटने की संभावना है।

क्रमशः एक-एक करके सभी कार्ड दिए जाते हैं तथा कहानी लिखवा ली जाती है। अन्त में वह कार्ड दिया जाता है जो बिल्कुल सादा या खाली है और उस संबंध में कल्पना के आधार पर कहानी लिखवाई जाती है।

इस **Projective method** में प्रयोज्य की प्रतिक्रियाओं के विश्लेषण तथा फलांक **(Scoring and analysis)** के विश्लेषण तथा उससे निष्कर्ष निकालने की सफलता वास्तव में परीक्षक के व्यक्तिगत अनुभव, कौशल एवं योग्यता पर निर्भर करती है। इसके बावजूद **Marray** के अनुसार विश्लेषण निम्नांकित प्रसंगों में किया जाता है :-

1. **Hero** (नायक) :- प्रत्येक कहानी में नायक या नायिका का पता लगाया जाता है। ऐसा समझा जाता है कि व्यक्ति इस नायक या नायिका के साथ आत्मीकरण स्थापित कर अपने व्यक्तित्व के शीलगुणों, विशेषकर अपनी महत्वपूर्ण आवश्यकताओं को दिखाता है।

2. **Need** (आवश्यकता) :- प्रत्येक कहानी में नायक या नायिका की मुख्य आवश्यकताएँ क्या-क्या है, इसका पता लगाया जाता है। **Murray** के अनुसार **TAT** परीक्षण द्वारा मानव की 28 आवश्यकताओं का मापन होता है जिनमें प्रमुख निम्न है :- उपलब्धि आवश्यकता, संबंधन आवश्यकता तथा प्रभुत्व आवश्यकता।

3. **Press** (प्रेस) :- प्रेस (शक्ति या बल) से तात्पर्य कहानी के उस वातावरण संबंधित बलों से होता है जिससे कहानी के नायक की आवश्यकता या तो पूरी होती है या पूरी होने से वंचित रह जाती है। **Murray** के अनुसार ये शक्तियाँ या बल 30 से भी अधिक है जो वातावरण संबंधी है। जैसे :- आक्रमकता तथा शारीरिक खतरा।

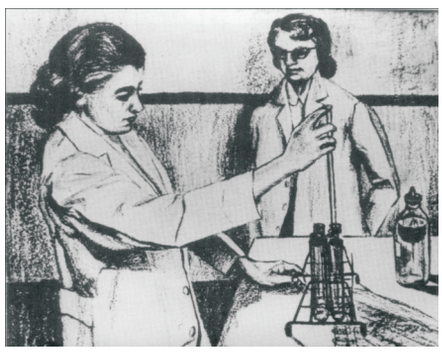

4. **Thema** (थीमा) :- प्रत्येक कहानी की थीमा का निर्धारण किया जाता है। थीमा से तात्पर्य नायक की आवश्यकता तथा प्रेस अर्थात् वातावरण संबंधी बल की अन्तःक्रिया से उत्पन्न घटना से होता है। थीमा द्वारा व्यक्तित्व में निरंतरता का ज्ञान होता है।

5. **Outcome** (परिणाम) :- परिणाम से तात्पर्य इस बात से होता है कि कहानी को किस तरह समाप्त किया गया है। कहानी का निष्कर्ष निश्चित है या अनिश्चित है। निश्चत एवं स्पष्ट निष्कर्ष होने से व्यक्ति में परिपक्वता तथा वास्तविकता के ज्ञान होने का बोध होता है।

Gilmer (1970) के अनुसार **TAT** द्वारा व्यक्तित्व के **Components** को निर्धारित करने में अपेक्षाकृत अधिक सफलता मिलती है। इस **Point of view** से यह परीक्षण **RT** से अधिक उपयोगी है। यह विधि बहुत दिलचस्प एवं रोचक है। कहानी लेखन की अवधि में प्रयोज्य को किसी प्रकार की नीरसता का अनुभव नहीं होता है फलतः व्यक्तित्व के सही मापन की संभावना बढ़ जाती है। **TAT** द्वारा आवश्यकताओं, मनोग्रन्थियों तथा संघर्षों को मापने में अधिक सफलता मिलती है। **Atkinson** के अनुसार इस परीक्षण से व्यक्ति के वर्त्तमान पारस्परिक संबंधों को समझने में बड़ी सहायता मिलती है। **Shaffer & Lazarus** के अनुसार **TAT** का शोधमूल्य काफी अधिक है। अनेक मनोवैज्ञानिकों ने इस परीक्षण में थोड़ा बहुत परिमार्जन लाकर व्यक्तित्व को समुचित रूप से मापने का सफल प्रयास किया।

RT की तरह **TAT** भी एक प्रकार का **Subjective test** है जिसमें इस बात की संभावना सदैव बनी रहती है कि **Subject** चित्र को देखने पर उत्पन्न अपनी वास्तविक मनोदशा को छिपा लें तथा बनावटी कहानी लिख दे। इस परीक्षण की सामग्री **RT** की अपेक्षा कम अस्पष्ट तथा असंरचित है। अतः इसके द्वारा अचेतन प्रेरकों के मापन की संभावना अपेक्षाकृत कम होती है। **Shaffer & Lazarus** ने **TAT** की कठिनाईयों का उल्लेख करते हुए ठीक ही लिखा है कि इस परीक्षण के उपयोग एवं इसकी व्याख्या के **Psychodynamic Theory** का प्रर्याप्त ज्ञान तथा **Projective Materials** का ज्ञान आवश्यक है जिसके आभाव में इस विधि द्वारा व्यक्तित्व का सही मापन कठिन बन जाता है।

RT की तरह **TAT** में भी विश्वसनीयता तथा वैधता की समस्या बहुत कठिन है। हलांकि **TAT** की **Reliability** जाँचने के कई शोध हुए हैं पर उसका **result** संतोषजनक नहीं मिला है। **Validity** भी संतोष जनक प्राप्त नहीं हुए हैं। स्पष्ट है कि **RT** और **TAT** के अपने-अपने गुण और दोष हैं। सामान्यतः **RT** से व्यक्तित्व-संगठन तथा **TAT** से व्यक्तित्व-घटक का मापन अधिक सही होता है। अतः इन दोनों परीक्षणों को एक दूसरे का पूरक कहा जाए तो कोई अतिशयोक्ति नहीं होगी।